इकाई 12 यूरोपीय संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन तथा जापान

संरचना

12.0 प्रस्तावना

12.1 उद्देष्य

12.2 यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका

- 12.2.1 राजनीतिक सम्बन्ध
- 12.2.2 विदेष नीति सहयोग : अभिसरण तथा अपसरण
- 12.2.3 आर्थिक सम्बन्ध

12.3 यूरोपीय संघ तथा रषिया

- 12.3.1 भागेदारी तथा सहयोग समझौता
- 12.3.2 रशिया पर सांझी रणनीति (1999)
- 12.3.3 चार सांझे क्षेत्र (2003)
- 12.3.4 राजनीतिक तथा सुरक्षा सम्बन्धी मामले
- 12.3.5 व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध

12.4 यूरोपीय संघ तथा चीन

- 12.4.1 राजनीतिक सम्बन्ध
- 12.4.2 क्षेत्रीय वार्तालाप
- 12.4.3 व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध
- 12.4.4 निष्कर्ष

12.5 यूरोपीय संघ तथा जापान

- 12.5.1 राजनीतिक सम्बन्ध
- 12.5.2 व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध

12.6 सारांष

12.7 अभ्यास प्रष्न

12.8 संदर्भ तथा कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.0 प्रस्तावना

पिछले कुछ सालों में यूरोपीय संघ ने अपने आर्थिक, राजनीतिक तथा सुरक्षा हितों को पूरा करने के लिए कई प्रकार के विदेश नीति यंत्रों का विकास किया है। इन विदेश नीति यंत्रों को इस तरह निर्मित किया गया है ताकि वे यूरोपीय अर्थव्यवस्था के विकास की गति को तेज़ कर सकें तथा यूरोपीय संघ को एक महत्वपूर्ण विष्व खिलाड़ी के रूप में उभरने में सहायता कर सकें। इस विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण यंत्र पड़ोसी नीति

(Neighbourhood Policy) का विस्तार है जिसका उद्देष्य मुख्यतया यूरोपीय राज्यों के लिए सांझे राजनीतिक तथा आर्थिक ढाँचे का विकास करना है। बाज़ार विस्तार यूरोप से पार भी हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप चीन तथा जापान के साथ सम्बन्धों में बढ़ोतरी की जा रही है। यूरोपीय संघ ने कई प्रकार के संविदात्मक (contractual) सम्बन्ध विकसित किए हैं तथा चीन, जापान, रशिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सामरिक (strategic) भागेदारी भी स्थापित की है।

इस इकाई में यूरोपीय संघ की विदेश नीति के तीन महत्वपूर्ण अंग : आर्थिक संघटन, राजनीतिक सहयोग तथा मूल्यात्मक संघटन (अर्थात् प्रजातंत्र, मानवीय अधिकार कानून का शासन, विवादों का शान्तिपूर्ण हल तथा नागरिक समाज का विकास) आदि हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, रशिया, चीन तथा जापान के साथ सम्बन्धों के इन तीन मूल आधारों की इनकी चर्चा एवं व्याख्या करेंगे।

12.1 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित विषयों को समझने के योग्य हो जाएँगेः

- राजनीतिक, विदेश नीति तथा आर्थिक सहयोग के संदर्भ में यूरोपीय संघ के संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सम्बन्ध;
- सहयोग समझौता, सांझी रणनीति तथा आर्थिक मामलों के संदर्भ में यूरोपीय संघ तथा रशिया के बीच सम्बन्ध;
- यूरोपीय संघ तथा चीन के बीच विषेषतः राजनीतिक, व्यापारिक एवं आर्थिक सम्बन्ध ; तथा
- यूरोपीय संघ के जापान के साथ राजनीतिक, व्यापारिक तथा आर्थिक सम्बन्ध।

12.2 यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय संघ का आपसी सहयोग, सांझा राजनीतिक मेलमिलाप, सांझे कूटनीतिक उपक्रमण (common diplomatic initiatives) तथा जनसाधारण के स्तर पर सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्धों का इतिहास काफी पुराना है। संयुक्त राज्य अमेरिका के यूरोपीय संघ के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध 1953 से चल रहे हैं।

12.2.1 राजनीतिक सम्बन्ध

नवम्बर 1990 के परा–अटलांटिक घोषणा (Trans-Atlantic Declaration) ने संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय समुदाय के बीच सम्बन्ध सषक्त करने को औपचारिक रूप दिया।

इस घोषणा के अंतर्गत यूरोपीय समुदाय तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच वार्षिक षिखर सम्मेलन का प्रावधान किया गया।

3 दिसम्बर 1995 में निष्पादित नई परा–अटलांटिक कार्यक्रम (New Transatlantic Agenda; NTA) में 4 महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संयुक्त कार्यवाही : (1) विष्व में शान्ति स्थायित्व, प्रजातंत्र तथा विकास को प्रोत्साहन, (2) वैष्विक चुनौती का सामना, (3) विष्व व्यापार तथा नजदीकी आर्थिक सम्बन्धों के प्रसार में योगदान, तथा (4) अटलांटिक के आर–पार पुलों की स्थापना का प्रावधान किया गया ।

परिणामस्वरूप नई परा–अटलांटिक कार्यसूची के ढाँचे के अंतर्गत दो नई संधियों पर हस्ताक्षर किए गए। मई 1998 में हुई परा–अटलांटिक आर्थिक भागेदारी (Trans-Atlantic Economic Partnership; TEP) के अंतर्गत "दोनों पक्षों ने समानुरूपता मूल्यांकन को परस्पर मान्यता देते हुए व्यापार में तकनीकी अवरोधों को हटाने तथा शुल्क कार्य विधि पर मिलकर कार्य करने के लिए समझौता किया।" इस नई आर्थिक पहल में बौद्धिक सम्पत्ति अधिकार तथा वित्तीय बाज़ारों पर नियामक वार्तालाप जैसे विषय भी निहित थे। परा–अटलांटिक आर्थिक संघटन तथा सहयोग को बढ़ाने के लिए यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में पहल को जून 2005 में आरंभ किया गया ताकि अटलांटिक के आर–पार आर्थिक संघटन को अधिक से अधिक क्षेत्रों में बढ़ाया जा सके तथा आर्थिक विकास की क्षमता को अधिकाधिक किया जा सके।

12.2.2 विदेष नीति सहयोग : अभिसरण तथा अपसरण

संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय संघ के बीच विदेश नीति सहयोग का यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष जोस मैन्यूल बारोसो (Jose Manuel Barroso) ने 9 फरवरी 2006 में जॉर्जटाऊन विष्वविद्यालय में दिए भाषण में इन शब्दों में वर्णित किया : यूरोप को संयुक्त राज्य अमेरिका की आवश्यकता है और संयुक्त राज्य अमेरिका को यूरोप की। जब हम सांझी आवाज में बोलते हैं तो कोई भी चुनौती बहुत बड़ी नहीं है। जब हम सांझी आवाज में बोलते हैं तो हम वास्तव में अपरिहार्य (indispensiable) भागेदार हैं।" इस संदेष का सारांष यह था कि दोनों मिलकर सच्चे अर्थों में विष्व के अगुआ बन सकते हैं। इनके संभावित खतरे तथा सामरिक हित भी सांझे हैं जैसे आतंकवाद का मुकाबला अथवा जनविनाष के हथियारों के प्रसार को रोकना। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मिलकर यूरोपीय संघ ने बल्कान में मानवीय तथा संकटकालीन, तथा पुनःनिर्माण प्रयत्नों में सहायता प्रदान की है। अफगानिस्तान में कमजोर प्रजातांत्रिक शासन को बचाने के लिए दोनों विकास एवं पुनः निर्माण सहायता प्रदान कर रहे हैं। इसी तरह मिश्र (Egypt) तथा लेबनान में भी प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए दोनों मिलकर कार्य कर रहे हैं। मध्यपूर्व में शान्ति स्थापित करने का खाका तैयार करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय चतुष्क (यूरोपीय संघ, रषिया तथा संयुक्त राष्ट्र संघ) का सदस्य होने के नाते, इजराइल तथा फिलिस्तीन के बीच झगड़ा समाप्त करने के प्रत्यनों में यूरोपीय संघ सीधे तौर से जुड़ा हुआ है। यूरोपीय संघ जहाँ शान्ति तथा फिलिस्तीनी राज्य की तैयारी का मुख्य दाता है, वहीं यह इजराइल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागेदार भी है।

संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय संघ मिलकर अफ्रीकी महाद्वीप में भी शान्ति तथा आर्थिक संघटन की प्रक्रिया में भी समन्वय कर रहे हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात, नाटो (NATO) के सामूहिक संसाधनों एवं क्षमताओं तक यूरोपीय संघ की आसान पहुँच है और वह इनका प्रयोग उन क्षेत्रों में सहयोग के लिए भी कर सकता है जहाँ नाटो सैनिक दृष्टिकोण से भाग नहीं ले रहा होता।

परन्तु कई ऐसे विषय भी हैं जिन पर यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के विचार मेल नहीं खाते जैसे अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (International Criminal Court) तथा जलवायु परिवर्तन। जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में जहाँ यूरोप ने क्योटो प्रोटोकॉल (Kyoto Protocol) को स्वीकार कर लिया है वहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका ने इसे रद्द कर दिया है। इसी तरह संयुक्त राज्य अमेरिका ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र का ढाँचागत समझौता (UN Framework Convention on Climate Change) के अंतर्गत वार्तालाप में सक्रियता से भाग लेने में हिचकिचाहट दिखाई है, तथा जैविक–विविधता और जैविक–सुरक्षा प्रोटोकॉल (Biodiversity and Biosafety Protocol) का अनुमोदन करने से भी इंकार कर दिया है। तथापि, विचारों में भिन्नता के बावजूद, यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका हाइड्रोजन तथा फ्यूजन ऊर्जा के विकास पर मिलकर कार्य कर रहे हैं।

आर्थिक संघटन की पृष्ठभूमि में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय संघ की सांझी राजनीतिक विचारधारा हैं जैसे प्रजातांत्रिक बहुलवाद, कानून का शासन, विचाराभिव्यक्ति, विष्वास तथा आस्था की स्वतंत्रता, न्यायिक स्वतंत्रता, मानवीय अधिकारों का सम्मान, प्रजातीय अल्पसंख्यकों के अधिकार, मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था, राज्य आधारित सामाजिक विकास। आतंकवाद के डर ने इनके रिष्तों को और मज़बूत कर दिया है। 9 सितम्बर 2001 की दुःखद घटना के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय संघ ने आतंकवाद समाप्त करने में सहयोग गतिविधियों को तेज़ कर दिया है। इन्होंने एक प्रत्यर्पण संधि (extradition treaty) तथा परा–अटलांटिक हवाई तथा समुद्री परिवहन की सुरक्षा से संबंधित संधि पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

12.2.3 आर्थिक सम्बन्ध

सम्पूर्ण विष्व व्यापार में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय संघ का संयुक्त हिस्सा 40 प्रतिषत है। ये दोनों विष्व के प्रमुख व्यापारिक भागेदार हैं। 2004 में वस्तुओं एवं सेवाओं में व्यापार की कीमत 627 बिलियन यूरो थी। यह राषि यूरोपीय संघ की चीन (225.2 बिलियन यूरो), जापान (144.5 बिलियन यूरो), तथा रषिया (177.6 बिलियन यूरो) तीनों से अधिक थी। 2005 में यूरोपीय संघ–25 से संयुक्त राज्य अमेरिका को वस्तुओं का 250 बिलियन यूरो का निर्यात हुआ। जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका से यह आयात 162.7 बिलियन यूरो का था।

यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों एक दूसरे के लिए विदेषी प्रत्यक्ष निवेष (FDI) के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। 2004 में जहाँ यूरोपीय संघ ने संयुक्त राज्य अमेरिका में 702.9 बिलियन यूरो का प्रत्यक्ष निवेष किया, वहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूरोपीय संघ की शेयर बाज़ार (stock market) में 802 बिलियन यूरो का निवेष किया। संयुक्त राज्य

अमेरिका तथा यूरोपीय संघ का एक दूसरे के देषों में कुल मिलाकर 1.5 ट्रिलियन यूरो का निवेष हो चुका है जिसके परिणामस्वरूप 1.2 से 1.4 करोड़ लोगों को रोज़गार भी मिला। (स्रोतः "दी ई यूज रिलेशन्स विद दी यूनाईटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका : इकानामिक रिलेशन्स" http://ec.europa.eu/comm/external_relations/us/economic_ relations/index. htm.) वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं।)

1995 में यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका ने परा–अटलांटिक व्यापारिक वार्तालाप (Trans-Atlantic Business Dialogue; TABD) आरंभ किया। मूलतः व्यापार/व्यवसाय सम्बन्धी प्रक्रिया होने के नाते, यह इस समय छः प्राथमिक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित कर रहा हैः नियामक सहयोग, बौद्धिक सम्पत्ति अधिकार, पूँजी बाज़ार, व्यापार तथा सुरक्षा, नवीनीकरण तथा विष्व व्यापार संगठन (World Trade Organization; WTO) का दोहा वार्ता चक्र (Doha round)।

यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में अत्याधिक अन्योन्याश्रिता (interdependence) के बावजूद इसका अर्थ यह नहीं है कि इन दोनों के बीच कोई व्यापारिक विवाद नहीं है। इनके झगड़ों का मूल कारण यह है कि वैष्विक बाज़ार के स्तर पर ये दोनों केवल सहयोगी ही नहीं बल्कि प्रतिस्पर्द्धी भी हैं। व्यापार विवादों का एक अन्य कारण इनकी भिन्न नियामक व्यवस्थाएँ तथा दृष्टिकोण भी हैं। इसके अतिरिक्त हारमोन के नियंत्रण, GMD मुद्दे तथा नागरिक विमान उद्योग को अनुदान (subsidy) देने जैसे विषयों पर भी विचारों में भिन्नता कायम है। इसके अतिरिक्त यूरोपीय संघ सभी व्यापारिक मुद्दे विष्व व्यापार संगठन के अंतर्गत विवाद निवारण प्रणाली (dispute settlement mechanism) के माध्यम से सुलझाने की इच्छुक है।

12.3 यूरोपीय संघ तथा रषिया

शीत युद्ध के दौरान रशिया तथा यूरोपीय समुदाय के बीच औपचारिक सम्बन्ध न्यूनतम थे। मास्को यूरोपीय समुदाय को संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाले पष्चिमी गुट का केवल एक आर्थिक संलग्न (appendage) मानता था। सोवियत संघ ने रोम की संधि (1957) का विरोध किया क्योंकि इसे उसने एक प्रतिभार (counterweight) के रूप में देखा। 1960 के दषक में सोवियत संघ ने यूरोपीय समुदाय के साथ नजदीकी राजनीतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्न किए। मिखाइल गोरबाचोव (Mikhail Gorbachev) द्वारा आरंभ किए गए *ग्लॉसनोस्ट* (*glasnost*) तथा *परस्ट्रोयका* (*perestroika*) के परिणामस्वरूप सोवियत संघ (USSR) तथा यूरोपीय समुदाय में नजदीकी सम्बन्धों की शुरुआत हो गई।

यूरोपीय संघ के रशिया के साथ सम्बन्ध, विषेषतः उत्तर–षीत युद्ध काल में, तथा पूर्व सोवियत संघ के बिखराव को यूरोपीय संघ की पड़ोसी तथा परिवर्धन (enlargement) नीतियों के संदर्भ में अध्ययन करने की आवश्यकता है। परस्पर हितों तथा तादाम्य के आधार पर यूरोपीय संघ पड़ोसी देष के साथ सहयोग का हाथ बढ़ाता है। इसमें पड़ोसी देषों में आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को समर्थन देना, प्रजातांत्रिक शासन की स्थापना के राजनीति सुधार तथा उन देषों के नागरिकों के मानवीय अधिकारों को सम्मान देना शामिल

हैं। यूरोपीय संघ की परिवर्धन नीति का मूल उद्देष्य नए राज्यों में स्थायित्व तथा समृद्धि का पोषण करना तथा रशिया के साथ नई दरार की उत्पत्ति को रोकना था।

12.3.1 भागेदारी तथा सहयोग समझौता

1991 के विघटन के बाद, रशिया के सामने अभूतपूर्व आर्थिक एवं वित्तीय संकट आ खड़ा हुआ। यूरोपीय संघ तथा रशिया के सम्बन्धों का केन्द्र बिन्दु जून 1994 में हस्तांतरित भागेदारी एवं सहयोग समझौता (Partnership and Cooperation Agreement; PCA) है। परन्तु इस भागेदारी एवं सहयोग समझौते को लागू होने में दिसम्बर 1997 तक का विलम्ब हो गया क्योंकि यूरोपीय संघ 1994–96 तक चले चेचन्या के युद्ध को लेकर चिंतित था। भागेदारी एवं सहयोग समझौता सांझे नियमों तथा उद्देष्यों पर आधारित था जैसे : (क) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा को बढ़ावा; (ख) प्रजातांत्रिक मानदण्डों तथा राजनीति/आर्थिक स्वतंत्रताओं को समर्थन; (ग) राजनीतिक, वाणिज्यिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करने हेतु समानता एवं भागेदारी की भावना का निर्माण; तथा (घ) अंततोगत्वा (eventual) यूरोपीय संघ–रशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र की स्थापना।

भागेदारी एवं सहयोग समझौते में व्यापक स्तर पर कई क्षेत्र निहित हैं जैसे राजनीतिक वार्तालाप, वस्तुओं तथा सेवाओं में व्यापार, व्यवसाय तथा निवेष, वित्तीय तथा वैधानिक सहयोग, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, षिक्षा तथा प्रषिक्षण, ऊर्जा, आणविक तथा अन्तरिक्ष सहयोग, पर्यावरण, परिवहन, सांस्कृतिक तथा ग़ैर–कानूनी गतिविधियों को रोकने के लिए सहयोग। (स्रोतः http://ec.europa.eu/comm/external _relations/Russia/ वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं।)

भागेदारी एवं सहयोग समझौते ने नियमित आदान–प्रदान तथा यात्राओं के लिए कई संस्थागत ढाँचों की भी स्थापना की जैसे मंत्रिस्तर पर स्थायी भागेदारी परिषद (Permanent Partnership Council), यूरोपीय संघ–रशिया सम्बन्धों के और विकास को सामरिक दिषा–निर्देष देने के लिए राज्य/सरकार के अध्यक्षों का अर्धवार्षिक षिखर सम्मेलन, सह–सांझेदारी अध्यक्षता पर आधारित संसदीय सहयोग समिति, तथा राजनीतिक प्रषासकों तथा निदेषकों में नियमित विचार–विमर्ष।

12.3.2 रशिया पर सांझी रणनीति (1999)

1999 में यूरोपीय संघ ने रशिया के साथ सांझी रणनीति (Common Strategy on Russia; CSR) को स्वीकृति दी जिसका उद्देष्य भागेदारी एवं सहयोग समझौते क आधार पर रशिया के साथ द्विपक्षीय सम्बन्धों को सषक्त करना था। रशिया पर सांझी रणनीति के प्रमुख उद्देष्य : रशिया में प्रजातंत्र, कानून का शासन तथा सार्वजनिक संस्थाओं का दृढ़करण, सांझे यूरोपीय आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में रशिया का एकीकरण, तथा सांझी चुनौतियों का सामना करना जैसे पर्यावरण, आणविक सुरक्षा तथा अपराध के विरुद्ध संघर्ष आदि था।

"रशिया पर सांझी रणनीति" के जबाव में रशिया के राष्ट्रपति वालडिमीर पूतिन (President Vladimir Putin) ने 1999 में ब्रस्सल्स में "यूरोपीय संघ व रशिया संघ के बीच सम्बन्धों के विकास पर मध्यावधि रणनीति" (Medium-Term Strategy for the Development of

Relations between the Russian Federation and the EU (2000-2010)" (QM-10) नाम से एक प्रापत्र, प्रस्तुत किया। इस प्रापत्र में रशिया की स्वायत्तता पर बल दिया गया तथा रशिया के आंतरिक मामलों में यूरोपीय संघ के हस्तक्षेप को स्वीकार न करने को दोहराया गया।

सन् 2000 में यूरोपीय संघ–रषिया सामरिक भागेदारी में दो विषय केन्द्रीयभूत रहेः (i) ऊर्जा वार्तालाप का आरंभ तथा (ii) सुरक्षा तथा रक्षा के क्षेत्रों में नजदीकी सहयोग की संभावनाएँ तलाष करना है। ऊर्जा वार्तालाप इस मान्यता पर आधारित थी कि ऊर्जा के क्षेत्र में व्यापार दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। अगले 25 सालों में यूरोप की ऊर्जा की माँग में काफी वृद्धि हो जाएगी तथा रशिया के ऊर्जा क्षेत्र को सुधार तथा निवेष की आवश्यकता है। यूरोपीय संघ के साथ भागेदारी के रशिया के दृष्टिकोण में स्वयं यूरोपीय लोगों की क्षमताओं पर आधारित पार–यूरोपीय सुरक्षा अनुबंधों को प्रोत्साहित करना निहित है। यूरोपीय संघ ने राजनीतिक वार्तालाप का प्रयोग रशिया की नीति को मोलडोवा तथा दक्षिणी काऊकासस के बीच विवाद को प्रभावित करने के लिए करने का प्रत्यन किया।

12.3.3 चार सांझे क्षेत्र (2003)

मई 2003 के सेंट पिटसबर्ग के षिखर सम्मेलन में यूरोपीय संघ तथा रशिया अपने बढ़ते हुए राजनीतिक, आर्थिक तथा सुरक्षा सहयोग को सषक्त करने के लिए चार सांझे क्षेत्रों (Four Common Spaces) की रचना करने पर सहमत हो गए। ये चार क्षेत्र थेः

1) **सांझा आर्थिक क्षेत्र** (*Common Economic Space*) : इसका उद्देष्य यूरोपीय संघ तथा रशिया के बीच पर्यावरण तथा ऊर्जा में नियामक अभिकरण तथा सहयोग के माध्यम से संघटित बाज़ार की रचना करना है। इसके अंतर्गत होने वाली गतिविधियाँ व्यापार तथा निवेष को बढ़ावा देगी तथा परिवहन (उदाहरणतया रेलमार्ग, मोटर मार्ग आदि) तथा दूर संचार के पार–यूरोपीय नेटवर्क को प्रोत्साहित करेगी।

2) **स्वतंत्रता, सुरक्षा तथा न्याय का सांझा क्षेत्र** (*Common Space on Freedom, Security and Justice*) : इसका उद्देष्य आतंकवाद तथा सीमा–पार अपराध (नषीले पदार्थों की तस्करी आदि) जैसी सांझी चुनौतियों के लिए न्यायिक तथा पुलिस सहयोग को आसान बनाना है।

3) **बाहरी सुरक्षा पर सांझा क्षेत्र** (*Common Space on External Security*): इसका उद्देष्य विदेश नीति तथा सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना, तथा अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय विवादों को संयुक्त राष्ट्र, यूरोप में सुरक्षा एवं सहयोग संगठन (Organization for Security and Cooperation in Europe; OSCE) तथा यूरोप की परिषद (Council of Europe) के ढाँचों के अंतर्गत सुलझाना है। सुरक्षा सहयोग के इस सांझे क्षेत्र में विवादों की रोकथाम, संकट प्रबंधन तथा विवादोपरान्त पुनःनिर्माण जैसे विषय निहित हैं।

4) **शोध, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक सहयोग में सांझा क्षेत्र** (*Common Space on Research, Educational and Cultural Cooperation*): यह विषेष रूप से आदान–प्रदान कार्यक्रमों पर आधारित होगा। ऐसी आषा है कि इस क्षेत्र के माध्यम से आम जनता के स्तर पर आर्थिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी।

12.3.4 राजनीतिक तथा सुरक्षा सम्बन्धी मामले

रशिया यूरोपीय संघ के पूर्वोन्मुख विस्तार से काफी चिन्तित था जब मई 2004 में दस केन्द्रीय तथा पूर्वी यूरोपीय देषों को यूरोपीय संघ तथा नाटो में प्रवेष दे दिया गया। इस विस्तार में यूरोपीय संघ की सीमाएँ रशिया के काफी नजदीक आ गईं और अब रशिया की इसके साथ सांझी सीमा है।

विवादों की रोकथाम तथा विवादोपरान्त पुनःनिर्माण के क्षेत्र में, यूरोपीय संघ चेचन्या में मानवीय अधिकारों की रक्षा करना चाहता है। बेलारूस का प्रजातांत्रिकरण चाहता है तथा दक्षिणी काऊकासस (Southern Caucasus) Nagorno–Karabakh; South Ossetia, Abkhazia में झगड़े का शान्तिपूर्ण तथा राजनीतिक हल चाहता है। आणविक हथियारों के क्षेत्र में यूरोपीय संघ यह प्रत्यन कर रहा है कि पुराने सैनिक प्रतिष्ठापनों को नागरिक/असैनिक उत्पादन में परिवर्तित कर दिया जाए तथा आणविक हथियार निर्माण योग्य प्लूटोनियम को ध्वंस कर दिया जाए। इसी तरह, रासायनिक हथियारों के क्षेत्र में भी यूरोपीय संघ की इच्छा है कि रशिया इस सम्पूर्ण बारूद को सांझी विदेष और सुरक्षा नीति (Common Foreign and Security Policy; CFSP) के ढाँचे के अंतर्गत निरस्त (dymine) कर दे।

रषिया तथा यूरोपीय समुदाय के बीच सहयोग का एक अन्य महत्वपूर्ण नीति ढाँचा "उत्तरीय विस्तार उपक्रमण (The Northern Dimension Initiative) है। जून 2000 में विकसित इस ढाँचे से आषा थी कि यह यूरोपीय संघ तथा इसके सदस्य–राज्यों के कार्यक्रमों का उत्तरी यूरोप बाल्टिक राज्य तथा रशिया के साथ समन्वय तथा सम्पूरकता में वृद्धि करेगा। इस संदर्भ में सहयोग के जिन क्षेत्रों को निहित किया गया वे हैंः पर्यावरण तथा रियक्टर सुरक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों के विरुद्ध संघर्ष, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा ज्ञानप्रद समाज की स्थापना।

यूरोपीय संघ तथा रशिया के बीच एक अन्य समस्या कालीनिनग्राद (Kaliningrad Region) क्षेत्र है। यह क्षेत्र लिथूनिया तथा पौलेण्ड के क्षेत्रों में रशिया के बाकी क्षेत्र से पृथक हैं। इस संदर्भ में महत्वपूर्ण मुद्दों पर दोनों में सहमति है जैसे वस्तुओं और सेवाओं का आवागमन, नियंत्रित सीमाओं के अंतर्गत सीमा पार करना, ग़ैर–कानूनी गतिविधियों से निपटने के लिए सीमा शुल्क सहयोग, विषिष्ट आर्थिक क्षेत्रों के विकास से क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहन, ऊर्जा आपूर्ति तथा मूल ढाँचें में विकास आदि।

यूरोपीय संघ के सामने रशिया एक बड़ी चुनौती है। यूरोपीय संघ रशिया को यूरोपीय संघ का सदस्य बनने का न्यौता न तो दे सकता है और न ही देगा। उधर रशिया अभी यूरोपीय संघ की सदस्यता का इच्छुक भी नहीं है।

12.3.5 व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध

यूरोपीय संघ रशिया का मुख्य व्यापारिक भागीदार है। रशिया के कुल आयात–निर्यात का तीसरा हिस्सा यूरोपीय संघ के साथ है। जहाँ यूरोपीय संघ का रशिया से आयात का 60 प्रतिशत खनिज तेल में व्यापार है, वहाँ इसका 40 प्रतिशत निर्यात् मशीनरी तथा परिवहन साजो–सामान है। इसके अतिरिक्त यूरोपीय संघ ऊर्जा के क्षेत्र में रशिया पर काफी निर्भर है विशेषतः प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के क्षेत्र में। यूरोपीय संघ–रशिया के बीच व्यापार का प्रमुख अंग ऊर्जा है। यूरोपीय संघ की रशिया को आर्थिक सहायता TACIS के माध्यम से होती है जो निजी निवेश, बैंकिंग तथा वित्तीय सुधारों (जिसमें कर–प्रणाली, बाज़ार, बीमा, ऋणपत्र, लेखा–परीक्षण, लेखा–विधि शामिल हैं) को प्रोत्साहित करता है।

1996–99 की अवधि में रशिया ने यूरोपीय संघ के सदस्य–राज्यों से लगभग 520 मिलियन यूरो की द्विपक्षीय वित्तीय सहायता प्राप्त की है। द्विपक्षीय वित्तीय सहायता क्षेत्रीय उपागम का अनुसरण करती है। जहाँ फिनलैण्ड, स्वीडन तथा डेनमार्क ने केलिनिनग्राद तथा उत्तर–पश्चिमी रशिया पर ध्यान केन्द्रित किया है और पर्यावरण, परिवहन तथा संचार को प्राथमिकता दी है, वहाँ ब्रिटेन, फ्रांस तथा जर्मनी की आर्थिक सहायता ने सामाजिक क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया है। इसके विपरीत, यूरोपीय पुनर्निर्माण व विकास बैंक (European Bank for Reconstruction and Development; EBRD) रशिया में ठोस वित्तीय क्षेत्र, छोटे तथा मध्यम व्यवसाय, मूल ढाँचे में विकास, बड़े उद्यमों के ढाँचीय पुनःनिर्माण का समर्थक है। द्विपक्षीय दाताओं तथा निजी–सहयोग को मिलाकर यूरोपीय संघ का रशिया में लगभग 2.5 बिलियन यूरो का निवेश हो चुका है।

12.4 यूरोपीय संघ तथा चीन

यूरोपीय संघ की चीन नीति हितों के समादर तथा परस्पर विकास के विनियोजन पर आधारित है। क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय दोनों दृष्टिकोणों से व्यापार तथा आर्थिक सोच–विचार इस भागेदारी के निर्माण का केन्द्र बिन्दु है। यूरोपीय संघ की चीन नीति के मूल उद्देश्यों में निहित : (i) द्विपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर चीन के साथ राजनीतिक वार्तालाप को व्यापक तथा गहरा बनाना और इसके स्तर को ऊँचा उठाना; (ii) कानून के शासन तथा मानवीय अधिकारों का सम्मान करने वाले उन्मुक्त समाज की ओर चीन के परिवर्तन को समर्थन देना; (iii) चीन को विश्व व्यापार व्यवस्था के अन्तर्गत लाकर विश्व अर्थव्यवस्था के साथ इसके संघटन को प्रोत्साहित करना तथा चीन में चल रहे आर्थिक एवं सामाजिक सुधारों की प्रक्रिया को समर्थन देना; (iv) चीन में यूरोपीय संघ की छवि को ऊँचा उठाना आदि हैं। (स्रोतः "दी ई यूज रिलेशन्स विद चीन" http://ec.europa.eu/comm/external_relations/china/intro/index.htm.)

12.4.1 राजनीतिक सम्बन्ध

यूरोपीय आयोग ने सबसे पहले 1995 में अपने संदेश "दीर्घ कालीन चीन–यूरोप सम्बन्धों की नीति" ("A Long Term Policy for China Europe Relations") में चीन तथा यूरोपीय संघ के सम्बन्धों की दीर्घकालीन रणनीति स्पष्ट की। उस समय से इन सम्बन्धों को तीन

स्तरों पर आगे बढ़ाया जा रहा है – राजनीतिक वार्तालाप (जिसमें मानवीय अधिकारों पर वार्तालाप विशेष रूप से निहित किया गया है), आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध, तथा यूरोपीय संघ–चीन सहयोग कार्यक्रम। इसके बाद 1998 में "चीन के साथ विस्तृत भागीदारी निर्माण" (Building a Comprehensive Partnership with China) के संदेश, 2001 में "यूरोपीय संघ की चीन के प्रति सामरिक नीति : 1998 के संदेश का कार्यान्वयन तथा वृहत्तर प्रभावशाली यूरोपीय संघ नीति के लिए भावी उपाय" (EU Strategy towards China : Implementation of 1998 Communication and Further Steps for a more effective EU Policy) के नाम से एक अन्य संदेश जारी किया गया। इसके अतिरिक्त यूरोपीय आयोग ने "A Maturing Partnership: Shared Interests and Challenges in EU-China Relations" के नाम से एक अन्य नीति पत्र तैयार किया जिसे 13 अक्टूबर 2003 को यूरोपीय परिषद ने मंजूरी दे दी। हाल ही के वर्षों में बीस विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय वार्तालाप यूरोपीय संघ तथा चीन के सम्बन्धों का अभिन्न अंग बन गया है। इस वार्तालाप में पर्यावरण संरक्षण से लेकर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी तथा औद्योगिक नीति से लेकर शिक्षा एवं संस्कृति तक कई विषय सम्मिलित हैं। इनके जवाब में चीन ने यूरोपीय संघ पर अपना पहला नीतिपत्र 13 अक्टूबर 2003 में प्रकाशित किया।

अक्टूबर 2006 में यूरोपीय आयोग ने चीन के प्रति अपनी रणनीति को अपने संदेश "EU-China: Closer Partners, Growing Responsibilities" में स्पष्ट किया। यह संदेश यूरोपीय संघ तथा चीन के सम्बन्धों को वैश्विक, आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति के रूप में पुनः उभरते हुए चीन के संदर्भ में आंकता है। प्रापत्र यह संकेत देता है कि यूरोपीय संघ चीन के साथ व्यापक विनियोजन को चालू रखने तथा उसमें और अधिक प्रसार करने का इच्छुक है। इसके लिए उपरोक्त संदेश में पाँच प्रकार की रणनीति अपनाई गई हैः चीन के बहुलवादी समाज में परिवर्तन को समर्थन, सम्पोषित विकास को प्रोत्साहन, व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्धों में सुधार, द्विपक्षीय सहयोग सशक्त करना, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना प्रमुख हैं। सामान्य स्तर पर, संदेश इस बात पर बल देता है कि वृद्धित उत्तरदायित्व एवं आशाएँ तथा विश्व में चीन का शक्तिशाली प्रभाव एवं स्थिति दोनों साथ–साथ चलनी चाहिए। (स्रोतः "दी ई यूज रिलेशन्स विद चीन" http://ec.europa.eu/comm/external_relations/china/intro/index.htm. वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं)

यूरोपीय संघ तथा चीन में राजनीतिक वार्तालाप 1994 में पत्रों के आदान–प्रदान के आधार पर औपचारिक रूप से स्थापित हुआ जिसमें चीन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरती हुई शक्ति स्वीकार किया गया। बाद में, अप्रैल 2002 में यह वार्तालाप एक नियमित तथा विभिन्न स्तरों पर होने वाली बैठकों की कड़ी में विकसित हो गया है (यूरोपीय संघ त्रिकोण, विदेश मंत्री, राजनीतिक निर्देशक, मिशनों के अध्यक्ष, क्षेत्रीय निदेशक, उच्च पदाधिकारियों की तकनीकी सभाएँ आदि)। यूरोपीय संघ तथा चीन के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन 1998 में आरंभ हुए।

यूरोपीय संघ चीन की मुक्त द्वार नीति एवं उदारीकरण तथा नागरिक समाज की स्थापना के संदर्भ में की गई पहल का समर्थन करता है तथा इसे सम्पोषित (sustain) करना चाहता है। इसके अतिरिक्त यह कानून के शासन पर आधारित अभिशासन के ढाँचे को

भी प्रोत्साहित करने का इच्छुक है। यूरोपीय संघ के इस संदर्भ में उपकम्रण चीन के सभी क्षेत्रों में मौलिक अधिकारों तथा स्वतंत्रताओं को प्रोत्साहन तथा उचित सम्मान, विचाराभिव्यक्ति, धर्म तथा समुदाय बनाने की स्वतंत्रता, मुकदमों की उचित जाँच का अधिकार तथा चीन के सभी क्षेत्रों के अल्पसंख्यकों को सुरक्षा देने से संबंधित है। यूरोपीय संघ चीन को मानवीय अधिकार परिषद (Human Rights Council) में भी सक्रिय तथा सकारात्मक भागीदार होने के लिए प्रेरित करेगा, चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ के मूल्यों को अपनाने के लिए कहेगा, जिनमें नागरिक एवं राजनीतिक अधिकारों का अन्तर्राष्ट्रीय प्रसंविदा (International Covenant on Civil and Political Rights) भी शामिल है। (स्रोतः यूरोपियन कमीशन, कम्युनिकेशन, टू दी काउंसिल एंड दी यूरोपियन पार्लियामेंट, "ई यू–चीन : क्लोजर पार्टनर्स, ग्रोइंग रिस्पोंसबिलिटी," कोम COM (2006) 631 फाइनल, 24 अक्तूबर 2006, http://ec.europa.eu/comm/external_relations/china/docs/06-10-24_final_com.pdf. वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं)

चीन तथा यूरोपीय संघ बहुपक्षीयवाद का समर्थन करके तथा मध्यपूर्व, अफ्रीका तथा पूर्व एशिया पर संरचनात्मक वार्तालाप के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने पर सहमत हैं। 9 सितम्बर 2006 में यूरोपीय संघ तथा चीन के शिखर सम्मेलन की समाप्ति पर दोनों पक्षों ने "एक उचित न्यायापूर्ण तथा नियमाधारित बहुपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था जिसमें संयुक्त राष्ट्र संघ की केन्द्रीय भूमिका हो, के प्रति अपनी प्रतिबद्धता तथा समर्थन को दोहराया। दोनों पक्षों ने संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था में सुधार लाने का भी समर्थन किया ताकि यह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा को खतरे की नई चुनौतियों का सामना करने के योग्य हो सके। दोनों पक्षों ने सभी अन्तर्राष्ट्रीय विवादों, आतंकवाद समेत, का हल संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था के माध्यम से करने की इच्छा प्रकट की।

यूरोपीय संघ बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय में विश्वास करता है। तथापि ताइवान के मसले पर यूरोपीय संघ जिस विदेश नीति का अनुसरण करता है उसे "शान्ति तथा स्थायित्व का संरक्षण" (Cross Strait peace and stability) का नाम दिया गया है। इसका अर्थ हैः (1) वर्तमान यथास्थिति में एक पक्षीय परिवर्तन करने वाले किसी भी कदम का विरोध, (2) शक्ति के प्रयोग का घोर विरोध, (3) व्यावहारिक हल तथा विश्वास–निर्माण उपायों को प्रोत्साहन, (4) सभी सम्बद्ध पक्षों में वार्तालाप को प्रोत्साहन तथा ताईवान के साथ शक्तिशाली आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों को जारी रखना।

2004 के यूरोपीय संघ तथा चीन के शिखर सम्मेलन के बाद जारी की गई संयुक्त घोषणा में सभी आणविक प्रसार विरोधी तथा निशस्त्रीकरण संधियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रपत्रों का अनुपालन करने का अनुरोध किया गया। इसमें जन विनाष हथियारों (Weapons for Mass Destruction; WMD) से संबंधित सामान, तकनीक तथा यंत्रों के निर्यात पर नियंत्रण तथा परम्परागत हथियारों के व्यापार को भी कम करने पर बल दिया। तथापि ईरान के आणविक मुद्दे पर चीन की केन्द्रीय भूमिका को विशेष रूप से यूरोपीय संघ रेखांकित करता है।

12.4.2 क्षेत्रीय वार्तालाप

तकनीकी, आर्थिक तथा राजनीतिक सहयोग ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण तथा सम्पोषित विकास (sustainable development) जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी फैला हुआ है। इन क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (UN Millennium Development Goals) के ढाँचे तथा विश्व व्यापार संगठन के समझौतों तथा प्रस्तावों के अनुरूप दिशा दी गई है। द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय दोनों प्रकार के सहयोग का तर्क परस्पर क्षमता निर्माण (तकनीकी अथवा कोई और) है। इसमें ज्ञान तथा आर्थिक समर्थन का आदान–प्रदान (जहाँ आवश्यक हो) शामिल है। विश्व ऊर्जा बाज़ार तथा बहुपक्षीय अभिशासन रचनातंत्रों (world energy markets and multilateral governance mechanisms) में चीन को संघटित करने की चाह के अतिरिक्त यूरोपीय संघ चीन की तकनीकी तथा नियामक विशेषज्ञता बढ़ाने में सक्रिय सहयोग दे रहा है जिसमें शून्य निस्सरण कोयला तकनीक (zero emission coal technology) का विकास तथा सम्पोषित विकास का ढाँचा शामिल है।

12.4.3 व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध

1998 में चीन में उदारीकरण के बाद यूरोपीय संघ तथा चीन में कुल दो तरफा व्यापार में छः गुणा की वुद्धि हो चुकी है। 2005 में यूरोपीय संघ–चीन व्यापार 210 बिलियन यूरो का था। 1980 के दशक में व्यापार अधिशेष (trade surplus) से यूरोपीय संघ 2005 में 106 बिलियन यूरो के व्यापार घाटे में पहुँच गई जो किसी भी व्यापार भागीदार से यूरोपीय संघ का सबसे बड़ा व्यापार घाटा था। व्यापक स्तर पर, चीन अब यूरोपीय संघ का दूसरा, (संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद), सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है तथा यूरोपीय संघ 2004 में चीन का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया। हाल ही के वर्षों में यूरोप की कम्पनियों ने चीन में ठोस रूप से निवेश किया है (पिछले पाँच साल में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का यह प्रवाह औसतन 4 बिलियन डॉलर रहा है) जिससे यूरोपीय संघ का कुल प्रत्यक्ष निवेश 35 बिलियन डॉलर के लगभग पहुँच गया है।

यूरोपीय संघ एक स्थायी तथा विकासशील चीन को यूरोप के नाजुक हित में मानता है। यूरोपीय आयोग का तर्क है कि चीन के स्थायी तथा मुक्त अर्थव्यवस्था में परिवर्तन में यूरोप का नाजुक हित है। यह इस बात को भी स्वीकार करता है कि चीन के निर्यात के लिए यूरोपीय बाज़ारों का मुक्त द्वार चीन के वृहतर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। परन्तु विकसित तकनीक, उच्च स्तरीय सामान तथा जटिल सेवाओं के लिए चीन के उभरते बाज़ार से यूरोप को भी खासा लाभ होगा। चीन से प्रतिस्पर्धात्मक कीमतों पर आयात से यूरोप के उपभोक्ता लाभ उठाते रहेंगे। यूरोपीय प्रतिस्पर्धा तथा विकास के लिए चीन की निर्यात शक्ति के सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय लाभ काफी महत्वपूर्ण है। ये लाभ अन्य क्षेत्रों के घाटे को पूरा कर देते हैं। (स्रोतः ए पालिसी पेपर ऑन ई यू–चीन ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट ' कम्पीटिशन एंड पार्टनरशिप", COM(2006) 632 final, 24 October 2006, http://trade.ec.europa.eu/doclib/docs/2006/october/tradoc_130791.pdf वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं)

परस्पर हितों की सुरक्षा का आधार एक न्यूनतम समतल क्षेत्र का विकास करना है, विशेषतः प्रतिस्पर्धा नीति तथा आंतरिक बाज़ार सम्बन्धी विषयों के क्षेत्रों में, जैसे

राज्य–नियंत्रित तथा निजी उद्यमों को समान दर्जा देना, बाज़ार के विखण्डन को समाप्त करना आदि। सांझे सहयोग से संबंधित क्षेत्र : उपभोक्ता वस्तुओं की सुरक्षा, सीमाशुल्क सहयोग, ऊर्जा सहयोग, वैश्विक पर्यावरण मुद्दों पर सहयोग जैसे जैविक विविधता, जलवायु परिवर्तन, कूड़ा–करकट प्रबंधन, अंतरिक्ष सहयोग, शैक्षणिक यात्राएँ तथा आदान–प्रदान, सूचना प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सहयोग आदि हैं।

सम्पोषित विकास के लिए यूरोपीय संघ जहाँ एक तरफ चीन में आंतरिक सुधार तथा आर्थिक उदारीकरण का समर्थन करता है, वहाँ दूसरी तरफ ऊर्जा सुरक्षा को ऊर्जा की माँग से कमी करके, ऊर्जा कुशलता को बढ़ाकर, हवा, बायोमॉस, तथा बायो ईंधन जैसे स्वच्छ एवं पुनः प्रयुक्त की जाने वाली ऊर्जा के प्रयोग, ऊर्जा मानदण्डों को प्रोत्साहन तथा शून्य निस्सरण कोयला तकनीक के विकास एवं प्रयोग से होने वाली बचत के माध्यम से सुनिश्चित करना चाहता है। इसी तरह यूरोपीय संघ जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में भी चीन के साथ अपनी नियामक विशेषज्ञता सांझी करता है।

आर्थिक सम्बन्धों का निर्माण परस्पर लाभ तथा सुविधाओं के आधार पर होता है। चीन के कुल विदेशी व्यापार में यूरोपीय संघ का हिस्सा 19 प्रतिशत है। दूसरी तरफ, चीन में व्यापार करने वाली कम्पनियाँ पूँजी, ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी लेकर आई हैं जिन्होंने चीन को अपनी उत्पादक क्षमता बढ़ाने में सहायता की है। बदले में, चीन के साथ व्यापार ने यूरोप में विकास तथा रोज़गार में वृद्धि में सहायता की है जैसे निर्यात में बढ़ोतरी, उच्च स्तरीय उत्पादों एवं सेवाओं में निरंतर विशिष्टीकरण, तथा यूरोपीय संघ की कम्पनियों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा को सशक्त करना। 2000–2005 के बीच यूरोपीय संघ द्वारा चीन को निर्यात में 100 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो इसके संसार के अन्य देशों को निर्यात में सबसे अधिक रहा है। जहाँ तक निवेश का प्रश्न है चीन के उत्पादों में कम लागत निवेश ने यूरोपीय कम्पनियों को विश्व बाज़ार में प्रतिस्पर्धात्मक उत्तोलन (competitive leverage) प्राप्त करने में सहायता की है जबकि दूसरी तरफ यूरोप में "चीन द्वारा निर्मित" (Made in China) उत्पादों की पहुँच चीन के निर्यात प्रोत्साहन के लिए महत्वपूर्ण अर्थ रखती है।

यूरोपीय संघ की चीन के साथ सहयोग की वर्तमान रणनीति "2002–06 के देश सामरिक पत्र" (Country Strategy Paper 2002-2006 (CSP) में परिभाषित की गई है जिसमें तीन क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रस्ताव किया गयाः

- सम्पोषित आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक सुधार प्रक्रिया तथा गरीबी के विरुद्ध संघर्ष का समर्थन, चीन का विश्व अर्थव्यवस्था में एकीकरण, विश्व व्यापार संगठन की प्रतिबद्धताओं को लागू करने के विशेष संदर्भ में;

- पर्यावरण विनाश को रोकना, प्राकृतिक वातावरण का संरक्षण, पर्यावरणीय सम्बन्धी सोच–विचार को अन्य नीति क्षेत्रों के साथ जोड़ना, द्रुत आर्थिक विकास के संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक विकास में संतुलन बनाए रखने के लिए कार्यवाही का समर्थन; और

- श्रेष्ठ अभिशासन, प्रजातंत्र तथा मानवीय अधिकार संबंधित नीतियों के प्रोत्साहन के माध्यम से कानून के शासन एवं मानव अधिकारों का सम्मान करने वाले उन्मुक्त समाज में परिवर्तन को समर्थन देना।

"2002–2006 देश के सामरिक पत्र" के अंतर्गत चीन के साथ सहयोग पर लगभग 250 मिलियन यूरो का खर्चा हुआ। (स्रोतः "दी ई यूज रिलेशन्स विद चीन" http://ec.europa.eu/comm/external_relations/china/intro/index.htm. वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं)

12.4.4 निष्कर्ष

यूरोपीय संघ तथा चीन का सम्बन्ध उनकी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नाजुक शक्ति संतुलन की आवश्यकता पर आधारित है। एक व्यापक सामरिक भागेदारी का विकास करने के लिए दोनों इन सम्बन्धों को और घनिष्ठ करने के इच्छुक हैं। यूरोपीय संघ अनिवार्यतः चीन की बाज़ार अर्थव्यवस्था, कानून के शासन तथा प्रजातांत्रिक जवाबदेही की दिशा में आंतरिक परिवर्तन करना चाहती है, इस आशा के साथ कि चीन एक अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का सम्मान करने वाला उत्तरदायी तथा विश्व स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी बन सके। यूरोपीय संघ तथा चीन की सामरिक साझेदारी में तीन प्रकार की समस्याएँ हैं, यूरोपीय संघ द्वारा हथियारों पर लगाए गए प्रतिबंध को हटाना, मानवीय अधिकार तथा चीन को बाज़ार अर्थव्यवस्था का दर्जा देना। हाल के वर्षों में, यूरोपीय राज्य उत्पादन के क्षेत्र में चीन की कुशलता के कारण यूरोपीय संघ अपने देशों में हुई बेरोज़गारी से काफी चिन्तित भी रहे हैं।

12.5 यूरोपीय संघ तथा जापान

जापान भी यूरोपीय संघ का महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार है। जापान तथा यूरोपीय संघ दोनों प्रमुख आर्थिक शक्तियाँ हैं। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में बेहतर स्थान बनाए रखने के लिए दोनों मधुर सम्बन्धों के इच्छुक हैं।

12.5.1 राजनीतिक सम्बन्ध

यूरोपीय संघ तथा जापान के सम्बन्ध 18 जुलाई 1999 के हेग घोषणा (Hague Declaration) पर आधारित हैं जिसमें राजनीतिक तथा आर्थिक सम्बन्धों के सम्बन्ध में निम्न विशेषताओं का वर्णन किया गया है:

क) सभी अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय तनावों का संयुक्त राष्ट्र संध के अंतर्गत समझौतों द्वारा हल;

ख) स्वतंत्रता, प्रजातंत्र, कानून का शासन, मानवीय अधिकार तथा बाज़ार अर्थव्यवस्था पर आधारित सामाजिक/आर्थिक व्यवस्था की स्थापना;

ग) आणविक तथा परम्परागत हथियारों के व्यापार में कमी करना;

घ) विश्व अर्थव्यवस्था तथा व्यापार के स्वस्थ विकास के लिए सहयोग को आगे बढ़ाना, विशेषतः मुक्त बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था को और अधिक सशक्त करना, संरक्षणवाद तथा एकवर्णीय उपायों को रद्द करना, व्यापार तथा निवेश में गेट (GATT) तथा ओ ई सी डी (OECD) के नियमों को लागू करना;

च) दोनों पक्षों के बाज़ारों तक समान पहुँचे तथा इस संदर्भ में व्यापार तथा निवेश के प्रसार में बाधा डालने वाले ढाँचीय तथा अन्य अवरोधों को तुलनात्मक अवसरों की उपलब्धि के आधार पर हटाना; तथा

छ) पार–राष्ट्रीय चुनौतियों का मिलकर सामना करना। इनमें पर्यावरण, ऊर्जा तथा संसाधनों का संरक्षण, आतंकवाद, अन्तर्राष्ट्रीय अपराध तथा नशीले पदार्थों से संबंधित आपराधिक गतिविधियों जैसे विषय निहित किए गए।

उपरोक्त विषयों पर होने वाली प्रगति की निरंतर जाँच करने के लिए परस्पर नियमित यात्राओं, यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष, यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष तथा जापान के प्रधानमंत्री के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन, तथा इसके बाद विदेशमंत्रियों एवं राजनीतिक निर्देशकों के बीच अर्धवार्षिक बैठकों का प्रावधान किया गया है। इन सभी बैठकों का उद्देश्य प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय मुद्दों पर सांझी समझ तथा संयुक्त नीति उपक्रमण तथा कार्यवाही को सुसाध्य बनाना है। राजनीतिक सम्बन्धों को मुख्यतः दोनों को विश्व के प्रमुख आर्थिक शक्तियों के रूप में उभरने के दृष्टिकोण से निर्देशित किया गया है ताकि इसके परिणामस्वरूप इनका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक प्रभाव भी बढ़ सके। (स्रोतः "दी ई यू रिलेशन्स विद जापान" http://ec.europa.eu/comm/external_relations/japan /intro/index.htm वेबसाइट पर ऑनलाइन देख सकते हैं)

यूरोपीय संघ तथा जापान दोनों प्रमुख राजनीतिक शक्तियाँ हैं जो सदृश्य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक प्रभाव का विकास करने की इच्छुक हैं। इनके राजनीतिक सहयोग को और अधिक बढ़ाने के निश्चय ही अच्छे अवसर हैं जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में मिलकर काम करना।

12.5.2 व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध

जापान यूरोपीय संघ का पाँचवाँ सबसे बड़ा निर्यात बाज़ार है तथा जापान के लिए यूरोपीय संघ दूसरा सबसे बड़ा बाज़ार है। इन दोनों के बीच व्यापार सम्बन्ध आपसी मान्यता प्राप्त समझौते (Mutual Recognition Agreement; MRA) पर आधारित हैं जो 1 जनवरी 2002 को लागू हुआ। लाल फीताशाही को काटते हुए, आपसी मान्यता प्राप्त समझौता समानुरूप मूल्यांकन की अनुमति देता है जिसका उद्देश्य परस्पर बाज़ार पहुँच को सुगम बनाना है।

1993 तथा 2004 के बीच जापान के यूरोपीय संघ को निर्यात में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो 50.1 बिलियन यूरो से बढ़कर 73.5 बिलियन यूरो पहुँच गया, जबकि इस अवधि में यूरोपीय संघ का जापान को निर्यात 28.8 बिलियन यूरो से बढ़कर 43.1 बिलियन यूरो

पहुँच गया। व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्धों के महत्वपूर्ण विषय हैं : दूरसंचार, विकास सहायता, पर्यावरण संरक्षण तथा परिवहन।

अतीत में यूरोपीय संघ का जापान में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश जापान के यूरोपीय संघ में निवेश की तुलना में काफी कम था। तथापि 1995–99 की अवधि में, यूरोपीय संघ द्वारा जापान में निवेश में तेज़ी आई है और अब यह निवेश दोनों तरफ से लगभग समान हो गया है। 1999 से यूरोपीय संघ के जापान में निवेश में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। वोडाफोन द्वारा जापान में 11 बिलियन डॉलर का निवेश यूरोपीय संघ का सबसे बड़ा योगदान है जिसने यूरोपीय संघ को जापान के इतिहास में सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेषी निवेशक बना दिया है। पिछले तीन सालों में यूरोपीय संघ जापान का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बन गया है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका भी जापानी प्रत्यक्ष निवेश का सबसे महत्वपूर्ण प्राप्तकर्ता है।

12.6 सारांष

यूरोपीय संघ की विदेश नीति राजनीतिक तथा आर्थिक हितों का मिश्रण है। बहुध्रुवीय विश्व की तलाश में यह विश्व की सभी मुख्य शक्तियों – जैसे चीन, जापान, रशिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका – से सम्बन्ध सुदृढ़ करना चाहता है। यूरोपीय संघ विश्व व्यापार संगठन व्यवस्था का शक्तिशाली समर्थक है तथा यह मानदण्डों पर आधारित नियमाधारित व्यवस्था के संस्थानीकरण द्वारा विश्व व्यापार व्यवस्था की स्थापना करना चाहता है। इस उद्देश्य के लिए यह सभी चारों महाशक्तियों के साथ सामरिक भागेदारी स्थापित करना चाहता है। तथापि प्रत्येक सामरिक भागेदारी में सहयोग तथा प्रतिस्पर्धा दोनों के तत्व मौजूद हैं तथा यूरोपीय संघ तथा इसके भागेदार इसका विकल्प नहीं हैं।

12.7 अभ्यास प्रष्न

1) यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में अभिकरण तथा अपकरण के क्षेत्रों की व्याख्या कीजिए।

2) यूरोपीय संघ तथा रशिया के सम्बन्धों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

3) यूरोपीय संघ तथा चीन के सम्बन्धों के मूल ढाँचे का विश्लेषण कीजिए।

4) यूरोपीय संघ तथा जापान के सम्बन्धों की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

12.8 संदर्भ तथा कुछ उपयोगी पुस्तकें

एंटोनेनको, ओ. एवं काथरियन पीनीक, (संपा.) *रशिया एण्ड दी यूरोपियन यूनियन,* न्यू यॉर्क : राउटलेज, 2005।

एक्सफॉर्ड, बेरी, व अन्य, *पोलिटिक्स : एन इंट्रोडक्शन,* कोनडोनः राउटलेज, 2005।

बरीशच, कटरीना, *इम्बेसिंग दी ड्रेगन : दी ई यू'ज पार्टनरशिप विद चाइना,* लंदन : सेंटर फॉर यूरोपियन रिफार्म, 2005।

यूरोपीय आयोग, *दी यूरोपियन यूनियन एण्ड दी यूनाइटेड स्टेट्स : ग्लोबल पार्टनर्स, ग्लोबल रिसपोन्सिबिलिटिज,* वाशिंगटन, डी.सी. : डेलीगेशन ऑफ दी यूरोपियन कमीशन इन दी यू एस ए, 2006।

गिलसन, जूली, *जापान एंड दी यूरोपियन यूनियन : ए पार्टनरशिप फॉर दी टवेनटी–फर्स्ट सेंचुरी,* हाउंडमिल्स, मैकमिलन, 2000।

जैन, राजेन्द्र के., (संपा.) *दी यूरोपियन यूनियन इन ए चेजिंग वर्ल्ड,* नई दिल्ली : रेडियंट पब्लिशर्स, 2002।

जैन, राजेन्द्र के., हार्टमूट इल्शनंहस एवं ए. एस. नारंग, (संपा.) *दी यूरोपियन यूनियन इन वर्ल्ड पोलिटिक्स,* नई दिल्ली : रेडियंट पब्लिशर्स, 2006।

जॉनसन, डेबरा एवं पॉल रोबिन्सन, पर्सपेक्टिव्स ऑन ई यू रशिया रिलेशन्स, न्यू यॉर्क : राउटलेज, 2005।

कोटज़ियास, नीकोस एवं पेट्रोस लियाकोरस, (संपा.) *ई यू–यू एस रिलेशन्सः रिपेयरिंग दी ट्रान्स अटलांटिक रिफ्ट,* हाउडमिल्स : पालग्रेव, मैकमिलन, 2006।